आप सभी विद्यार्थियों ने चंद्रगुप्त नाटक पढ़ा है/इस पाठ को पुनः दोहराया जा रहा है ताकि करोना महामारी के कारण जो लाकडाउन हुआ है, उसमें प्राप्त अवसर का सदुपयोग किया जा सके। आप सभी छात्र छात्रायें इस बात का ध्यान रखें कि आपको उपलब्ध कराये गये 'ई कन्टेन्ट' के अतिरिक्त विभाग के सभी शिक्षक आपकी शंकाओं का समाधान करने को तत्पर हैं। उनसे आप विषय से संबंधित शंकाओं का समाधान प्रतिदिन प्रातः 10 बजे से दोपहर 1.00 बजे तक Whats-up के जरिये कर सकते हैं।

'चंद्रगुप्त' नाटक का अध्ययन करने के क्रम में हर पाठक के मन में यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि इस नाटक का नायक कौन है – चंद्रगुप्त अथवा चाणक्य? नाटक के रचयिता जयशंकर प्रसाद निश्चित रूप से चन्द्रगुप्त को ही इस नाटक में नायक रूप में प्रस्तुत किये हैं क्योंकि इसका नामकरण उन्होंने नायक के नाम पर किया है। ऐसा उन्होंने अपने अन्य नाटकों में भी किया है, यथा- स्कंदगुप्त, अजातशत्रु, ध्रुवस्वामिनी आदि। फिर इसी नाटक में नायकत्व के प्रश्न पर विचार क्यों? क्या उनके अन्य नाटकों में नायक का पद निर्विवाद रूप से पुस्तक के नामकरण वाले नायक/नायिका को प्राप्त होता रहा है? इसका प्रमुख कारण है इस नाटक की घटनायें जिनका सूत्रधार चाणक्य है।

सर्वप्रथम चाणक्य का परिचय प्रथम अंक के प्रथम दृश्य में प्राप्त होता है। स्थान तक्षशिला का गुरुकुल है जहाँ चाणक्य ने अध्ययन और अध्यापन दोनों ही किया है। चंद्रगुप्त और मौर्य आदि उसके शिष्य हैं। घटनाक्रम में गंधर्वेश्वर के पुत्र आम्भीक से उसका विवाद होता है और चाणक्य उद्घोषणा करता है –

"राजकुमार, ब्राह्मण न किसी के राज्य में रहता है और न किसी के अन्न से पलता है; स्वराज्य में विचरता है और अमृत होकर जीता है।" यह घोषणा उसके आत्मसम्मान की परिचायक है और नाटक में आगे आने वाली घटनाओं की पूर्वसूचक भी। प्रथम अंक में ही पुनः चाणक्य का आहत स्वाभिमान फुफकारता हुआ दिखाई देता है। अवसर नंद की राजसभा का है जहाँ चाणक्य निर्भीकता से राजा नंद की अनुचित नीतियों का

(2) विरोध करता है और तदनंतर बंदी होता है। इसके में चंद्रगुप्त एक नायक की भूमिका में सामने आता है। ~~इसके~~ पहले तो वह राजसभा चाणक्य के अपमान का प्रतिरोध करता है और जब उसे मगध से निर्वासित कर दिया जाता है तब भी वह चुप नहीं बैठता। नंद के बंदीगृह पर आक्रमण करके वह चाणक्य को मुक्त कराता है।

इसके पश्चात चाणक्य चंद्रगुप्त को अपने अभिभावकत्व में ले लेता है। उसके निर्देशानुसार चंद्रगुप्त सिकंदर की ~~सैनिक~~ शिविर में भी रहकर वहाँ की सैन्य संचालन में जानकारी इकट्ठी करता है, जो बाद में उसके काम आती है। चाणक्य हर संभव स्थल पर ~~को~~ चंद्रगुप्त को भारत के भावी सम्राट के रूप में प्रस्तुत करता है। वह पर्वतेश्वर से नंद की सेना के विरुद्ध सहायता माँगता है और असफल होने पर भी उत्साह नहीं खोता। चंद्रगुप्त को मालवों और क्षुद्रकों की संयुक्त सेना का सेनापति बनवाता है और पर्वतेश्वर को विवश होकर उसका लोहा मानना पड़ता है। बाद में पर्वतेश्वर की सैन्य सहायता वह इस शर्त पर प्राप्त कर लेता है कि यदि चंद्रगुप्त सफल होगा तो मगध के राज्य में से आधा अंश उसका होगा। चंद्रगुप्त की सहायता के लिए वह मगध की सेना का उपयोग भी करता है जब राजकुमारी कल्याणी एक सैन्य दल का नेतृत्व करते हुए पर्वतेश्वर और सिकन्दर के प्रतिद्वंद्व युद्ध में उपस्थित होती है।

चाणक्य चंद्रगुप्त को 'निष्कंटक' करने के लिए सारे उद्योग करता है। इस क्रम में, ~~एक~~ पर्वतेश्वर को मिटाने के लिए विषकन्या का प्रयोग, कल्याणी को आत्मघात की स्थिति तक पहुँचाना और मालविका जैसे स्वर्गीय कुसुम को असमय ही मुरझाने देना सम्मिलित है। चाणक्य का सूत्र वाक्य है - "चाणक्य सिर्फ साध्य देखता है, साधन कुछ भी हो"। वह चंद्रगुप्त के पिता के अधिकारों को भी नियंत्रित रखता है, उनका अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं लेता। ~~इस~~ ~~इस तरह चाणक्य जो एक सेनापति का निर्वासित पूर्व सेनापति का पुत्र है और मगध से निर्वासित भी~~ इस तरह चाणक्य चंद्रगुप्त को एक निर्वासित सेनापति पुत्र से सम्राट तक पहुँचाता है। वह अपने सारे लक्ष्य

(3) प्राप्त करता है और खुशी-खुशी स्वेच्छा से वानप्रस्थ जीवन की ओर अग्रसर होता है। उसकी ये विशेषतायें और नाटक की घटनाओं के केन्द्र में रहने के कारण उसे नायकत्व की दौड़ में खड़ा कर देती हैं। फिर भी शास्त्रोक्त कारणों से वह नायकत्व से वंचित क्यों किया गया? इस प्रश्न का उत्तर भारतीय नाट्य शास्त्र के उन लक्षणों में है जिनके अनुसार नाटक के नायक को कुछ विशेष गुणों से युक्त होना चाहिए। इन गुणों/लक्षणों के अनुसार चन्द्रगुप्त धीरोदात्त नायक है। उसमें धीरोदात्त नायकों के सारे गुण विद्यमान हैं और सहज ही लक्षित होते हैं। वह गंभीर, क्षमावान, निरहंकारी, वीर, दृढ़व्रत क्षत्रिय राजा है। चाणक्य साभिप्राय कई स्थलों पर चंद्रगुप्त के क्षत्रियत्व की घोषणा नाटक में करता है। चंद्रगुप्त गंभीर व्यक्तित्व का स्वामी है। वीरता प्रदर्शन से लेकर भावनाओं की अभिव्यक्ति तक वह कहीं भी उच्छृंखल नहीं दिखता। क्षमावान होने के कारण वह सिल्यूकस तथा अन्य शत्रुओं को समय-समय पर जीवनदान देता है। वह वीर है परंतु उसे अपनी वीरता का अहंकार नहीं है। वह राजकुमारी कल्याणी को हिंस्त्र जीव से बचाता है; कार्नेलिया का सम्मान बचाता है; चाणक्य को बंदीगृह से मुक्त कराता है और ये सारे कार्य वह अकेले बिना किसी की सहायता के करता है। पर्वतेश्वर और सिकंदर के युद्ध में, सिल्यूकस से निर्णायक युद्ध में और मगध के राजा नंद से मगध का उद्धार करने के क्रम में चंद्रगुप्त की वीरता का प्रमाण है। फिलिपस जब उसे द्वंद्व युद्ध के लिए ललकारता है तब, चंद्रगुप्त शिष्ट भंगिमा से कहता है - 'आधी रात, पिछले प्रहर कभी भी मैं युद्ध के लिए प्रस्तुत हूँ।' यह भंगिमा पाश्चात्य नायकों का स्मरण कराता है जो ड्यूएट (DUET) के लिए सदैव तत्पर रहते थे। नाटक के अंत में घटनाओं की फलप्राप्ति भी चंद्रगुप्त को ही होती है — मगध का साम्राज्य प्राप्त होता है और नायिका कार्नेलिया से विवाह भी होता है। इसके विपरीत चाणक्य अपने अपमान का प्रतिशोध लेने के पश्चात वानप्रस्थ आश्रम की ओर प्रस्थान करता है।

विचार करके देखने पर 'चंद्रगुप्त' नाटक का नायकत्व चंद्रगुप्त को ही प्राप्त होना चाहिए। चाणक्य इस नाटक का अत्यंत महत्वपूर्ण पात्र है और कई घटनाओं का सूत्रधार भी। चाणक्य का इस नाटक में वही स्थान है जो पहिये में धुरी का होता है।